7

उत्तम तप धर्मांग पूजा

श्री दशलक्षण धर्म विधान

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

: रचयिता :

कविवर पण्डित राजमल पवैया

7

श्री उत्तम तप धर्म पूजन

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

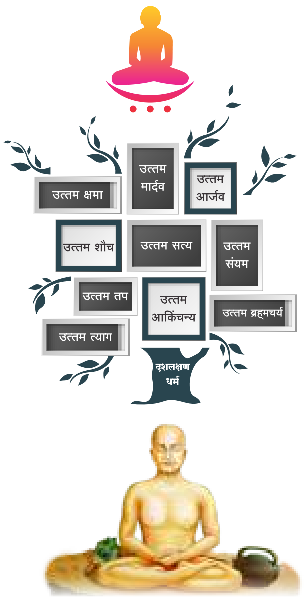

उत्तम तप धर्मांग पूजन

स्थापना

(छन्द–कुण्डलिया)

उत्तम तप ही सार है इस संसार मझार।
परम तपस्वी सुमुनि ही पाते भव का पार।।
पाते भव का पार आत्मा को ध्याते हैं।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर ही वे सुख पाते हैं।।
ज्ञान–ध्यान–वैराग्य भावना भाते कर श्रम।
परम मोक्ष सुख पाते हैं वे ही तो उत्तम।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्ग!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्ग!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्ग!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अष्टक

(छन्द–सार/जोगीरासा)

शुद्धभाव तप की शोभा से मैं शोभित हो जाऊँ।
जन्म जरा मरणादि नाश कर पूर्ण सुखी हो जाऊँ।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

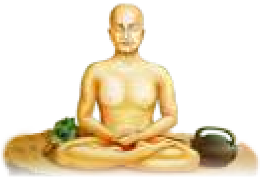

शुद्धभाव तप चन्दन लाऊँ भव-ज्वर पीर मिटाऊँ।
शीतल शान्त निराकुल बनकर निज की महिमा गाऊँ।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय क्रोधकषायविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

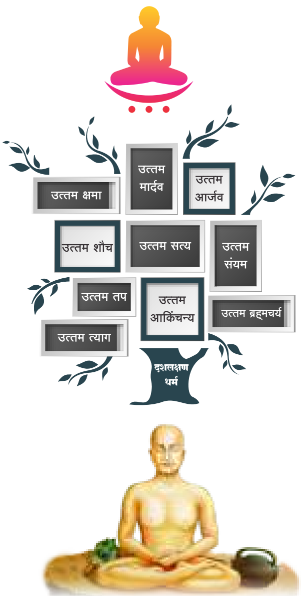

शुद्धभाव के अक्षत लाऊँ अक्षय पद प्रकटाऊँ।
जो बाधक कारण शिवपथ के उनको दूर हटाऊँ।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय मानकषायविनाशनाय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्धभाव के पुष्प मनोहर काम–बाण दुख–नाशक।
महाशील गुण ही उत्तम है पद निष्काम प्रकाशक।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय मायाकषायविनाशनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

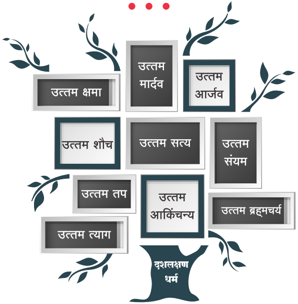

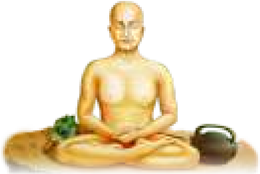

शुद्धभाव रस सुचरु चढ़ाऊँ पूर्ण तृप्त हो जाऊँ।
अनाहार पद शाश्वत पाऊँ रागरहित सुख पाऊँ।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय लोभकषायविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

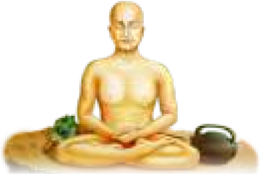

शुद्धभाव के ज्ञानदीप ले आत्म–स्वभाव जगाऊँ।
महामोह मिथ्यात्व तिमिर को पल में पूर्ण भगाऊँ।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

शुद्धभाव की धूप चढ़ाऊँ शुक्लध्यान के द्वारा।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ मैं काटूँ भवदुख कारा।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय विभावपरिणतिविनाशनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

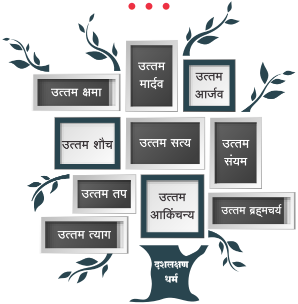

शुद्धभाव के तरु फल लेकर महामोक्षफल पाऊँ।
भाव-द्रव्य-नोकर्म नाश कर शाश्वत निजपद पाऊँ।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय महामोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

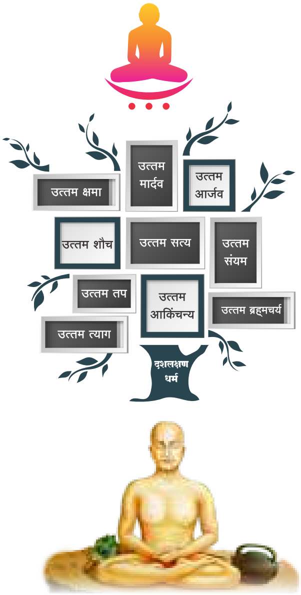

शुद्धभाव के अर्घ्य चढ़ाऊँ भव भावों को क्षय कर।
पद अनर्घ्य पाऊँ मैं अपना राग-द्वेष को जय कर।।
उत्तम तप धारण कर मैं भी द्वादश तप उर धारूँ।
पूर्ण अनिच्छुक बनकर मैं भी केवलज्ञान उजारूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

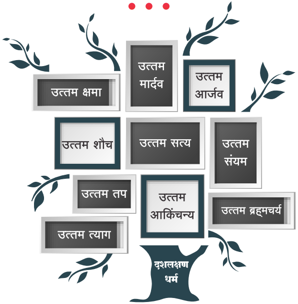

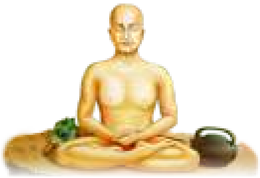

अर्घ्यावलि

(छन्द–मानव)

भवसागर तरना है तो द्वादश तप उर में धारो।
ले भावलिंग अंतर में निज तरणी पार उतारो।।
दृढ़ अपरिग्रही बनो तुम बन पूर्ण अनिच्छुक जिनमुनि।
जब तक न मोक्षसुख पाओ तब तक श्रम करना है मुनि।।
उत्तम तप धर्म श्रेष्ठ है निज का ही आश्रय करना।
द्वादश तप के द्वारा फिर संसार ताप सब हरना।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

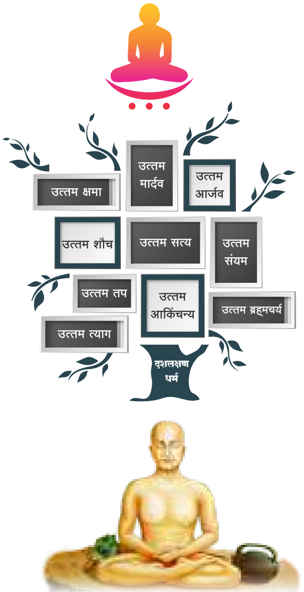

जिनगुण सम्पत्ति तप धारो त्रेसठ उपवास करो तुम।
अरु भिन्न-भिन्न तिथियों में अनशन तप हृदय धरो तुम।।
उत्तम तप धर्म मनोहर श्री मुनि धारण करते हैं।
कर्मों के सकल भार को तप द्वारा वे हरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री जिनगुणसम्पत्तितपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

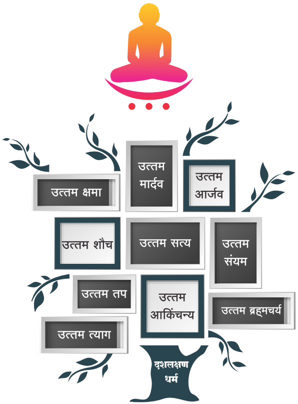

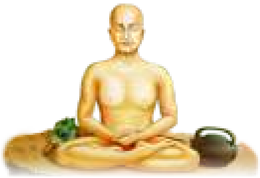

तप कर्मक्षपण उपवास इक शत अड़तालिस जानो।
अरु भिन्न-भिन्न तिथियों में अनशन तप करना मानो।।
उत्तम तप धर्म मनोहर श्री मुनि धारण करते हैं।
कर्मों के सकल भार को तप द्वारा वे हरते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कर्मक्षपणतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

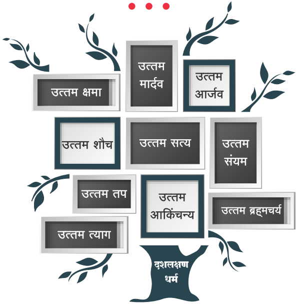

तप सिंह निष्क्रीड़ित इक शत सतहत्तर दिन का होता।
इनमें इक शत पैंतालिस उपवास सदा ही होता।।
बाकी बत्तीस दिवस हैं पारणा सुविधि के उत्तम।
यह अनशन तप कहलाता मुनिवर करते हैं बिन श्रम।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहनिष्क्रीडिततपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

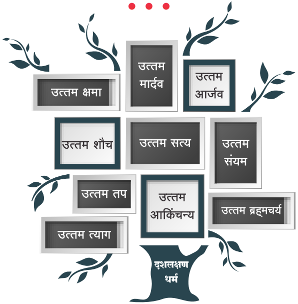

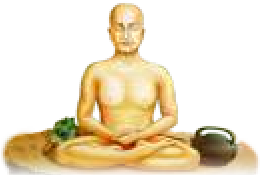

सर्वतोभद्र तप इक शत दिन का होता है पावन।
उपवास पचत्तर होते पच्चीस पारणा के दिन।।
इसकी विधि सहज ज्ञानमय जिन–आगम ने बतलाई।
यह अनशन तप कहलाता जो है पवित्र सुखदाई।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वतोभद्रतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

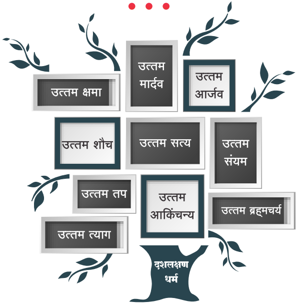

तप महा सर्वतोभद्र दो सौ पैंतालिस दिन के।
उपवास इक शत छ्यानवे पारणा उनन्चास दिन के।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री महासर्वतोभद्रतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

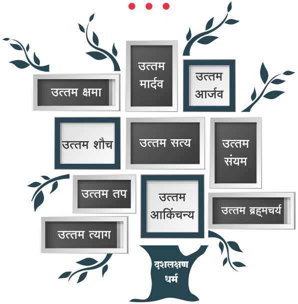

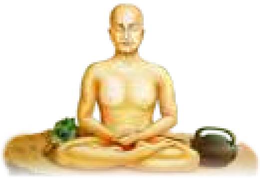

लघु निष्क्रीड़ित तप अस्सी दिन के महान होते हैं।
पारणा बीस होती हैं उपवास साठ होते हैं।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री लघुनिष्क्रीडिततपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

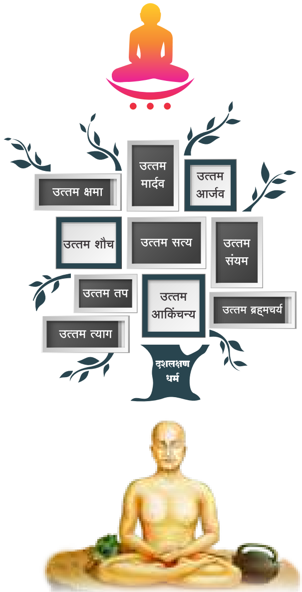

चौंतीस दिवस का मुक्तावलि तप है बहु सुखकारी।
उपवास पच्चीस पारणा नौ होते हैं दुखहारी।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तावलितपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

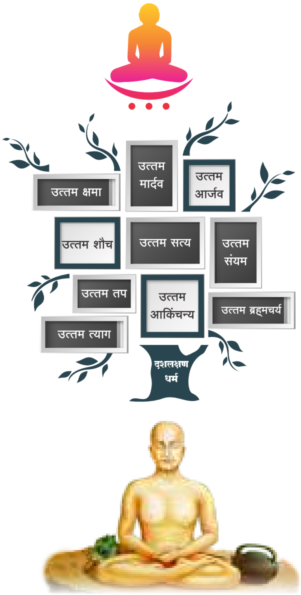

तप कनकावली वर्ष इक उपवास बहत्तर जानो।
प्रति मास करो छह उत्तम निज का स्वरूप पहचानो।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री कनकावलितपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

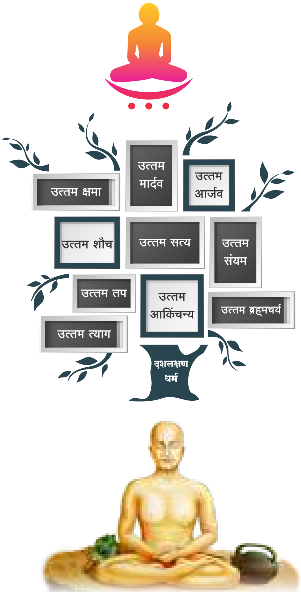

विधि से तप करो सुदर्शन दिन अड़तालीस प्रमाणो।
चौबीस पारना चौबीस उपवास श्रेष्ठ हैं जानो।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

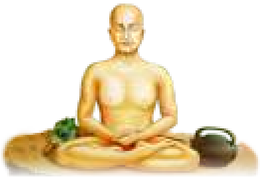

यह तप उत्कृष्ट सुपावन उपवास इक वर्ष जानो।
इसके हैं भेद अनेकों आगम पढ़ कर पहचानो।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री उत्कृष्टतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

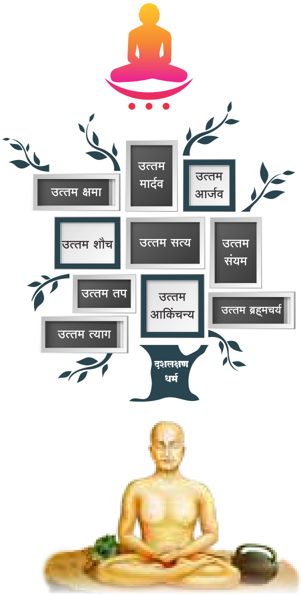

आचाम्ल सुतप अति पावन इक शत–उन्नीस दिनों के।
उपवास बताये इक शत पारणा उन्नीस दिनों के।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अनशन तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री आचाम्लतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जितनी हो भूख उदर में उससे कम ही लो भोजन।
तप अवमौदर्य यही है धारण करते हैं मुनिजन।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह दूजा तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री अवमौदर्यतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

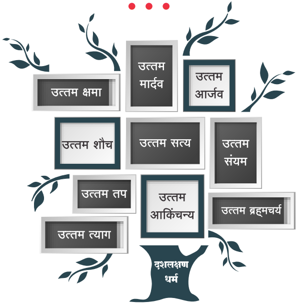

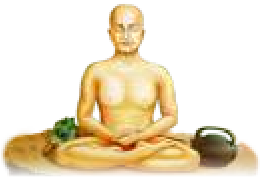

तप वृत्तिपरिसंख्यान इस विधि से भोजन लेंगे।
विधि नहीं मिली तो इस दिन भोजन हम कभी न लेंगे।।
जिन-आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह तीजा तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री वृत्तिपरिसंख्यानतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

रसपरित्याग तप सुन्दर जिह्वा इन्द्रिय वश करता।
क्रम–क्रम पाँचों रस तजने वाला मुनि भवदुख हरता।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह चौथा तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

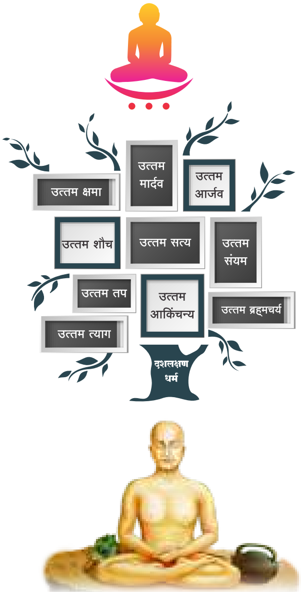

यह विविक्त शय्यासन तप उर को बहु सुदृढ़ बनाता।
भू शोध भिन्न आसन कर मुनि तप से बहुसुख पाता।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह पंचम तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्यासनतपोधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

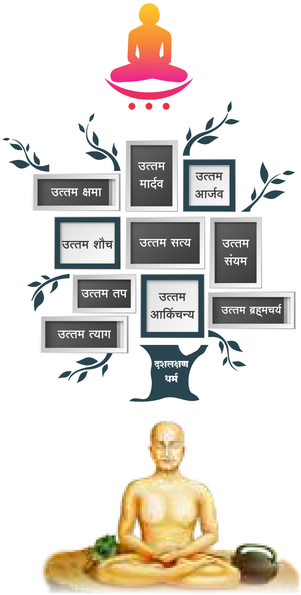

तप कायक्लेश अति उत्तम आनन्द प्रदाता मानो।
तन को कृश करते मुनिवर होता है खेद न मानो।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह षष्टम तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेशधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

दूषण प्रमादवश जो हो श्रीगुरु को बतलाते हैं।
प्रायश्चित्त दंड सुगुरु दे तो पाकर हर्षाते हैं।।
जिन-आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह सप्तम तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्ततपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

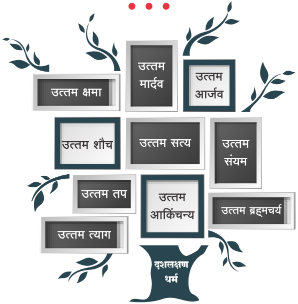

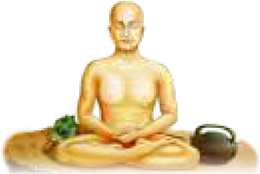

जो देव धर्म गुरु थानक विनयित वंदन करते हैं।
अतिशय या सिद्धक्षेत्र प्रति उर विनय भाव धरते हैं।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह अष्टम तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

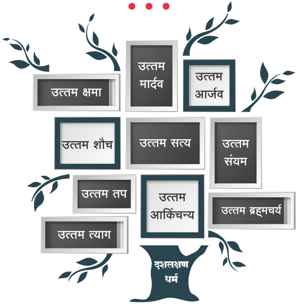

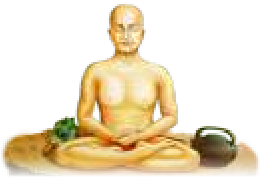

जो मुनि थक जाते अथवा वे रोगी हो जाते हैं।
तप वैयावृत्ति पाल मुनि बहु साता पहुँचाते हैं।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह नवमा तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री वैय्यावृत्तितपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जिनध्वनि सुन हर्षित होना तप स्वाध्याय नित करना।
आम्नाय पाल कर अपनी अज्ञान सर्वथा हरना।।
जिन-आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह दशवाँ तप है पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तप से ममत्व के त्यागी व्युत्सर्ग सुतप के धारी।
निज आत्मा में स्थिर रहते हो जाते मुनि अविकारी।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह तप ग्यारहवाँ पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

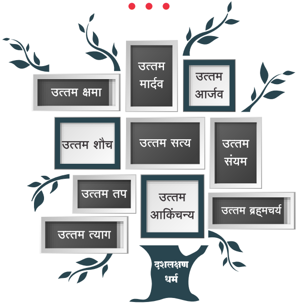

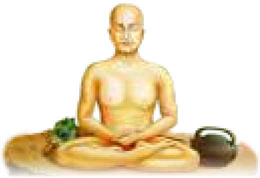

मन-वच-काया को थिर कर एकाग्रचित्त होते हैं।
परभाव तज देते हैं तप ध्यानरूप होते हैं।।
जिन-आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह तप बारहवाँ पावन यह करके भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

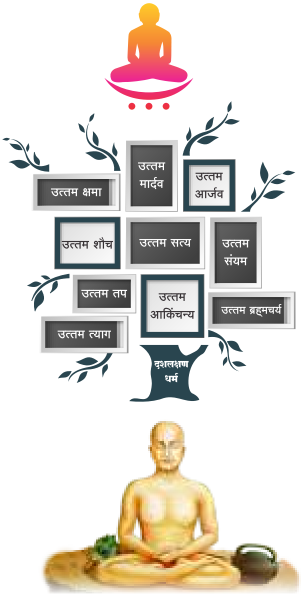

द्वादश तप धारण करके सम्यक् प्रकार से पालो।
तप से कर्मों को क्षय कर निज सिद्ध स्वपद ध्रुव पा लो।।
जिन–आगम में जो विधि है उस ही विधि से तप करना।
यह पावन हैं तप द्वादश इनको कर भवदुख हरना।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशउत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

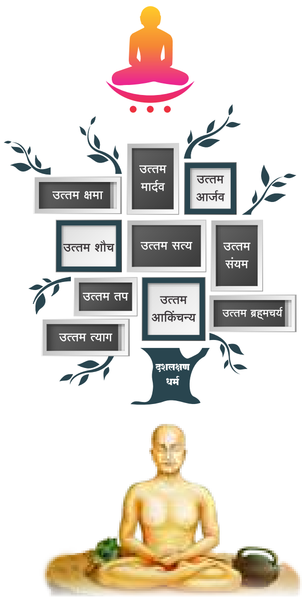

जयमाला

(छन्द–गीत)

ज्ञान की पवन चली पाया भेद ज्ञान।
समकित पाया किया निज श्रद्धान।।
पाया है स्वरूपाचरण पावन पवित्र।
किया क्षय तीनों ही कषाय का वितान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

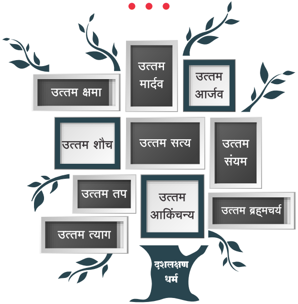

(छन्द–मानव)

संयम की आभा पायी उर में विशाल।
निर्ग्रंथ पद पाया हर्ष है महान।।
हुआ मैं अनिच्छुक सदैव के लिए।
चौबीसों परिग्रह त्यागे तप ले प्रधान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

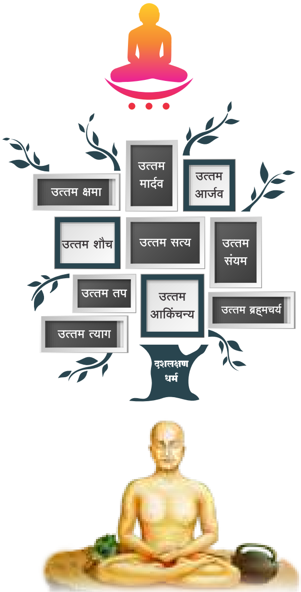

छठे सातवें का मिला झूला तत्काल।
धर्मध्यान करके लिया फिर शुक्लध्यान।।
ध्यान द्वारा पाया यथाख्यात चारित्र।
घातिया विनाश पाया मैंने पूर्ण ज्ञान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

योग क्षीण करते ही पाया सिद्ध पद।
मैंने आज पा ही लिया पद निर्वाण।।
भाव तप मैंने धारा तत्त्वज्ञान कर।
तप फल निर्जरा का पा लिया विहान।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

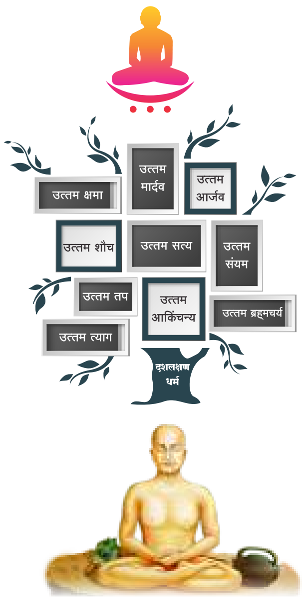

(दोहा)

पूर्ण अनिच्छुक तपस्या, का फल है निर्वाण।
यही भावना है प्रभो, करूँ आत्मकल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

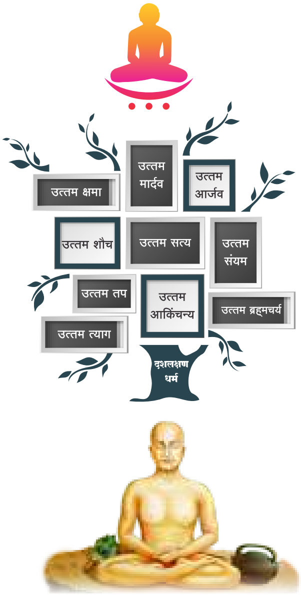

आशीर्वाद

(छन्द–सोरठा)

निश्चय तप का भाव उर में जागा हे प्रभो।
परम सुख के हेतु सम्यक् तप ही मैं करूँ।।

इत्याशीर्वादः

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

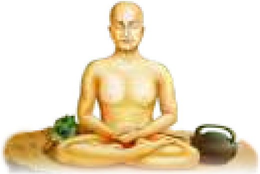

-: जाप्य मंत्र :-

॥ ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपधर्माङ्गाय नमः ॥

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु